वार्तालाप-632, सीहोर, दिनांक 20.09.08 (म.प्र.)
Disc.CD No.632, dated 20.09.08 at Sehore (M.P.)
Part-1

समयः 00.00-02.17

बाबा: हाँ जी।

जिज्ञासुः बाबा, जो आत्माएं जन्म-मरण के चक्कर में आती हैं वो भी गर्भ में भृकुटी के मध्य में प्रवेश करती हैं।

बाबा: हाँ जी।

जिज्ञासुः और सुप्रीम सोल शिव जो मुकर्रर रथ में प्रवेश करते है वो भी भृकुटी के मध्य में प्रवेश करते है। फिर दोनों में क्या अंतर है?

बाबाः दोनों में ये अन्तर है कि वो बने-बनाए शरीर में प्रवेश करते हैं, शिव। और जो माँ के अन्दर गर्भ तैयार होता है वो बना-बनाया नहीं है। जब बीज पड़ता है तो उस बीज से वो गर्भ तैयार होता है 4-5 महीने में। तो अंतर पड़ जाता है। और बाप जिस मुकर्रर तन में प्रवेश करते हैं वो सारी सृष्टि के आदि का पुरुष है, आत्मा है। बाकी जो आत्माएं हैं वो आदि की आत्माएं नहीं कही जा सकती। आदि में सो अंत में। वो आलराउंड पार्टधारी है। और आत्माएं आलराउंड पार्ट उतना नहीं बजा सकती। जो ऊँचा है जरूर ऊँचे में प्रवेश करेगा। इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट भी प्रवेश करते हैं। क्या पहले नारायण में प्रवेश कर सकेंगे? नहीं। जिस नंबर का धर्मपिता, उसी नंबर के नारायण वाली आत्मा में प्रवेश कर सकता है। और शिव बाप तो है ऊँच ते ऊँच धर्मपिता। ऊँच ते ऊँच बाप। तो किसमें प्रवेश करेगा? ऊँच ते ऊँच बाप में ही प्रवेश करेगा। हाँ, जी।

Time: 00.00-02.17
Baba: Yes.
Student: Baba, the souls who pass through the cycle of birth and death also enter in the middle of the forehead (*bhrikuti*) in the womb.
Baba: Yes.
Student: And the Supreme Soul Shiva also enters the middle of the forehead of the permanent chariot. Then what is the difference between both?
Baba: The difference between both is, He [i.e.] Shiva enters a readymade body. And the foetus that develops in the mother's womb is not a readymade [body]. When the seed is sown, the foetus develops from that seed within four-five months. So, it makes a difference. But the permanent body that the Father enters is the first man, [the first] soul in the beginning of the entire world. All the other souls cannot be called the souls of the beginning. Whoever happens in the beginning, the same happens in the end. He is an *all-round* actor. The other souls cannot play an *all-round part* to that extent. The One who is the highest will definitely enter someone who is high. Abraham, Buddha, Christ also enter [someone]. Will they be able to enter the first Narayan? No. As is the *number* (rank) of the religious father, he can enter the Narayan of the same *number* (rank). And the Father Shiva is the highest religious father. He is the highest on high Father. So, whom will He enter? He will certainly enter the highest father. Yes.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समयः 02.21-05.05

जिज्ञासुः बाबा, महाभारत में भीष्म पितामह को अर्जुन प्रिय था। जबकि बड़ा भाई युधिष्ठिर था। युधिष्ठिर प्रिय क्यों नहीं था, अर्जुन प्रिय क्यों था?

बाबाः हाँ। बाप को ज्ञानी तू आत्मा ज्यादा प्रिय है या कोई दूसरी आत्मा प्रिय है? (जिज्ञासु - ज्ञानी तू आत्मा।) वो भी बाबा है कौरव संप्रदाय का। क्या? कौरव संप्रदाय में बड़े ते बड़ा कौन है? भीष्म पितामह। वो भी बाप को फालो किया है। बाप ज्ञानी तू आत्माओं को पसन्द करता है। युधिष्ठिर को ज्ञानी तू आत्मा नहीं कहेंगे। युधिष्ठिर का पार्ट किसका है? ब्रह्मा बाबा का। उनको ज्ञानी तू आत्मा नहीं कहेंगे। धर्म की धारणाएं उनमें ज्यादा थीं। ज्ञान रत्नों से, ज्ञान के बाणों से बुद्धि रूपी तरकस भरा हुआ अर्जुन का ही था। जो सबसे जास्ती पुरुषार्थ का अर्जन करता है। यूँ तो प्रवेश होने के कारण एक ही पर्सनालिटी युधिष्ठिर है, एक ही पर्सनालिटी अर्जुन है। अर्जुन अर्थात् जिसके तन में, जिसके शरीर रूपी रथ में भगवान बाप प्रवेश करता है। ऐसे नहीं कहते हैं कि युधिष्ठिर में प्रवेश करते हैं। युधिष्ठिर का रथ निमित्त बना हुआ नहीं है बाप के रूप में पार्ट बजाने का। धारणा करने वाली माता ज्यादा होती है या बाप धारणा करने में ज्यादा आगे होता है? माँ होती है। माताओं में प्यूरिटी अधिक होती है। युधिष्ठिर कहो, ब्रह्मा कहो, वो धारणावान् माता का पार्ट है।

Time: 02.21-05.05

Student: Baba, [it is shown] in Mahabharata [that] Arjun was the dear to Bhishma Pitamah . But Yuddhishthir was the elder brother. Why wasn't Yudhishthir dear, why was Arjun dear [to him]?

Baba: Yes. Is the knowledgeable soul dearer to the Father or is some other soul dear? (Student: Knowledgeable soul.) He (Bhishma Pitamah) is also the Baba of the Kaurava community. What? Who is the eldest in the Kaurava community? Bhishma Pitamah. He has also followed the Father. The Father likes the knowledgeable souls. Yudhishthir will not be called a knowledgeable soul. Who plays the *part* of Yudhishthir? Brahma Baba. He will not be called a knowledgeable soul. He had the virtues related to the religion more. It was Arjun alone whose quiver like intellect was full of the gems of knowledge, arrows of knowledge. He earns (the attainments through) *purushaarth* (spiritual effort) the most. From the point of view of entrance [of Shiva] the same personality is Yudhishthir as well as Arjun. Arjun means the one in whose body, chariot like body God the Father enters. It is not said that He enters Yudhishthir. The chariot of Yudhishthir is not the instrument to play the *part* of the Father. Does the mother assimilates [the knowledge] more or is the father more ahead in assimilating [the knowledge]? The mother is ahead. The mothers have more *purity*. So, call him Yudhishthir, call him Brahma, it is the *part* of a virtuous mother.

समयः 05.11-06.32

जिज्ञासुः सतोप्रधान आत्मा दुःख नहीं भोगती है। (बाबाः हाँ, जी।) जो आत्माएं अभी पावन बनती जाती हैं, वो भी...

बाबाः ...कौनसी आत्मा अभी पावन बन गई?

जिज्ञासुः जो भी आत्माएं पावन बनेंगी...।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबाः बनेंगी। जो पावन बनेंगी उनका चेहरा हमेशा खुला हुआ दिखाई पड़ेगा। सदैव खुशनुमा दिखाई देंगी। सबसे पहले पावन कौन बनेगा? नंबरवार ब्रह्मा हैं। नंबरवार ब्रह्मा सो? क्या बनते हैं? विष्णु बनते हैं। तो जब ऐसी स्टेज पकड़ेंगे तो चेहरा खुशनुमा दिखाई पड़ेगा सदैव देखने वालों को या कभी चेहरा लटका हुआ दिखाई पड़ेगा? खुशनुमा दिखाई पड़ेगा।

जिज्ञासुः बाबा, उनमें ऐसी क्या क्वालिटी आ जाती है जो वो दुःख महसूस नहीं करते?

बाबाः आत्मा संपूर्ण बननी है तो उसमें प्यूरिटी आ जाएगी या नहीं आ जाएगी? और जहाँ प्यूरिटी है वहाँ पीस एंड प्रासपर्टी स्वतः ही आ जाती है।

Time: 05.11-06.32

Student: A *satopradhaan*[1] soul does not experience sorrow. (Baba: Yes.) The souls who become pure now, they too...

Baba: …Which soul has become pure now?

Student: The souls who will become pure...

Baba: They **will** become. The faces of those who become pure will always appear to be delighted. They will always appear to be joyful. Who will become pure first of all? There are Brahmas one higher than the other (*numbervaar*). What do they become from Brahmas who are *numbervaar*? They become Vishnu. So, when they achieve such a *stage*, will the face appear to be always joyful to the observers or will the face ever appear to have fallen? It will appear to be joyful.

Student: Baba, what quality appears in them so that they don't experience sorrow?

Baba: When the soul becomes complete, will [the quality of] *purity* appear or not? And where there is *purity*, *peace and prosperity* come there automatically.

समयः 06.48-08.29

जिज्ञासुः बाबा, बाबा बोलते हैं कि एडवांस पार्टी में जो मेरे बच्चे होंगे उनको हार्ट अटैक नहीं आएगा?

बाबाः मेरे बच्चे होंगे तब ना। (जिज्ञासु - लेकिन आ गया बाबा।) मेरे होंगे तब ना। मेरे बच्चे माना? मेरे बच्चे माना क्या? कौन कहने वाला है? सुप्रीम सोल कहने वाला है। सुप्रीम सोल के बच्चे आत्मिक स्थिति वाले होंगे या देह अभिमान वाले होंगे? (किसी ने कहा: आत्मिक स्थिति वाले।) आत्मिक स्थिति वालों का तो मरण होने का सवाल ही नहीं। जिनमें भक्तिमार्ग के संस्कार रह जावेंगे उनको शरीर जरूर छोड़ना पड़ेगा? कोई भी संस्कार जीवन में अगर 100 परसेन्ट स्टेज को पहुँच जाता है तो शरीर छूट जाता है।

जिज्ञासुः तो बाबा अगर घर में गीता पाठशाला चल रही है।

बाबाः उससे क्या होता है? गीतापाठशालायें वाले ढ़ेर होते हैं पढ़ाई पढ़ाने वाले। पढ़ाई पढ़ाने वाले सब राजा बन जावेंगे क्या? ब्रह्माकुमारियाँ कोई राजा बन जावेंगी, कोई प्रजा बन जावेंगी। कोई प्रजाकुमारी कोई राजाकुमारी। ऐसे बहुत से पढ़ाने वाले हैं जो सिर्फ सतयुग में जाके टीचर बन जावेंगे। बस। राजा रानी परिवार में जन्म भी नहीं लेंगे। तो प्रजावर्ग के हुए या राजा हुए? (जिज्ञासु - प्रजावर्ग के।) और?

[1] Consisting in the qualities of goodness and purity

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 06.48-08.29
Student: Baba, Baba says that those who are my children in the Advance Party, will not have heart attack?
Baba: Only if they are My children. (Student: But Baba, [someone] had it.) Only if they are **My** children. 'My children' means… What is meant by 'My children'? Who is says this? The *Supreme Soul* says this. Will the children of the *Supreme Soul* be the ones with a soul conscious stage or with body consciousness? (Someone said: Soul conscious stage.) There is no question of the death of those with a soul conscious stage at all. Those in whom the *sanskaars* of the path of *bhakti* remain will definitely have to leave their body. If any of the *sanskaars* reaches 100 *percent stage* in the life, they have to leave the body.
Student: So, Baba, a *Gita paathshaalaa* is functioning at his home.
Baba: So what? There are many who run the *Gita paathshaalaa*, who teach the knowledge. Will all those who teach become kings? Some Brahmakumaris will become a king and some will become subjects. Some are *prajaa kumari* (daughter of the subjects) and some are *raajaa kumari* (princess). There are many such teachers who will just become teachers in the Golden Age. That is all. They will not even have birth in the family of the king and the queen. So, do they belong to the subject category or are they kings? (Student: They are of the subject category.)

समयः 08.37-11.03

जिज्ञासुः बाबा, (बाबाः हाँ, जी।) जो आत्मा गर्भ गृह में प्रवेश होके जन्म से पहले वो पिंड छोड़ देती है। जो आत्मा...

बाबाः जन्म लेने से पहले ही शरीर छोड़ देती है। हाँ।

जिज्ञासुः वो आत्मा किस कर्म से संबंध रखती है

बाबाः उनका जितना हिसाब-किताब है उस माता के साथ उतना हिसाब-किताब पूरा करके वो शरीर छोड़ देगी। दुःख-सुख देने का हिसाब-किताब होता है ना पूर्व जन्मों का। तो हिसाब-किताब पूरा हुआ और शरीर छोड़ा।

दूसरा जिज्ञासुः जैसे कोई आत्मा है शरीर छोड़ने के बाद ज्यादा से ज्यादा समय सूक्ष्म शरीर में रह सकती है?

बाबाः हर आत्मा सूक्ष्म शरीर में नहीं रहती है। सूक्ष्म शरीर वो ही आत्मा धारण करती है जिनके ऊपर पापों का बोझा ज्यादा चढ़ जाता है। इसलिए ज्यादा पाप न करें इसलिए थोड़े या लम्बे समय तक उनको सूक्ष्म शरीर में रहना पड़ता है।

दूसरा जिज्ञासुः वो ज्यादा पाप नहीं करेंगी…

बाबाः न पाप कर पाएंगी न पुण्य कर पाएंगी।

Time: 08.37-11.03
Student: Baba, (Baba: Yes.) The soul who enters the womb and leaves the foetus before being born; the soul who……
Baba: …leaves the body before being born. Yes.
Student: What are the karmic accounts of that soul in relation [to the mother]?
Baba: It will leave the body after settling the karmic accounts with the mother. There are karmic accounts of the past births of giving sorrow or happiness, aren't there? So, as soon as the karmic accounts are settled, it leaves the body.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Second student: For example there is a soul. After leaving the body how long can it remain in a subtle body?
Baba: Every soul does not remain in a subtle body. Only those souls who accumulate burden of sins more take on a subtle body. So, to avoid them from performing more sins, they have to live in a subtle body for a short or long period.
Second student: If it does not commit more sins…
Baba: It will neither be able to commit sins nor noble actions.

दूसरा जिज्ञासुः फिर भी कितना समय? 13 दिन रहती है क्या?
बाबाः 13 दिन तो क्या दो दिन भी रह सकती हैं।
दूसरा जिज्ञासुः जैसे कार्य क्रम करते हैं 13 दिन तक।
बाबाः वो कार्यक्रम तो भक्तिमार्ग की बातें हैं।
दूसरा जिज्ञासुः नहीं वो बताते हैं 13 दिन…
बाबाः वो बताते हैं सो सब सच्चा होता है क्या?
दूसरा जिज्ञासुः नहीं तो इसमें क्या सच्चाई है?
बाबाः सच्चाई ये है कि हर आत्मा जो है जो अचानक शरीर छोड़ती है वो थोड़े समय तक ये लम्बे समय तक सूक्ष्म शरीर धारण कर सकती है। जिन-जिन आत्माओं के साथ उसका हिसाब-किताब होगा उनके साथ उन्हें तंग करती रहेगी। और हिसाब-किताब पूरी करती रहेगी।
दूसरा जिज्ञासुः और अगर कुछ नहीं करती है तो समझ लो उसने जन्म ले लिया?
बाबाः हाँ, सुख-दुःख नहीं भोगती है।
दूसरा जिज्ञासुः नहीं अगर दूसरों को परेशान नहीं करती है, कुछ नहीं करती है, तो क्या उसने जन्म ले लिया?
बाबाः वो ब्रह्मा बाबा जैसी आत्माएं होती हैं, उनको फरिश्ताई आत्मा कहा जाता है। वो बहुत थोड़ी है।
Second student: Still, for how long [does it remain in the subtle body]? Is it for 13 days?
Baba: Leave aside [the topic of] 13 days, it can even stay [in a subtle body] for just two days.
Second student: For example they perform the rituals for 13 days.
Baba: Those rituals are the topics of the path of *bhakti.*
Second student: No, they tell that for 13 days...
Baba: Is all what they sat true?
Second student: No then, what is the truth in this?
Baba: The truth is that every soul who leaves the body suddenly, can take on a subtle body for a short or long period. They will keep troubling and settling their karmic accounts with the souls with whom they have karmic accounts.
Second student: And if it does not do anything, then should we think that it has taken birth?
Baba: Yes, it does not experience happiness or sorrow.
Second student: No, if it does not trouble others, if it does not do anything [to others], does it mean that it has taken birth?
Baba: They are souls like Brahma Baba; they are called angelic souls. They are very few. … (to be continued)

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Part-2

समयः 11.04-12.17

जिज्ञासुः बाबा, सतयुग में भी टीचर्स की आवश्यकता होती है क्या?

बाबाः क्यों? वहाँ पढ़ेंगे लिखेंगे नहीं? आर्ट नहीं बनाएंगे? संगीत नहीं सीखेंगे? अरे वो मुरली बजाएंगे कि नहीं बजाएंगे? फिर क्या बात? चित्रकला, चित्रकला एक कला है ना सीखने की। अच्छे-अच्छे चित्र बनाते रहेंगे। नहीं तो ये चित्र कहाँ से आये लक्ष्मी-नारायण के, देवताओं के जो द्वापरयुग में तैयार हुए? जो जो राज बनते गए उनके चित्र बनाते गए।

दूसरा जिज्ञासुः बाबा, वहाँ तो बोलते हैं कि सब रायल बुद्धु होंएंगे, फिर चित्रकला कैसे बनाएंगे?

बाबाः वो बुद्धु होना, चित्रकला बनाना ये कोई बड़ी बात है? चित्रकला बनाना ये कोई बड़ी बात है? चित्रकला बनाने के लिए होशियार होना चाहिए? बुद्धिमान होना चाहिए?

Time: 11.04-12.17

Student: Baba, is there the need of teachers in the Golden Age as well?

Baba: Why? Will they (the deities) not read and write there? Will they not draw *art*? Will they not learn music? *Arey*, will they play the flute or not? Then why do you have a question? Painting is an art to be learnt, isn't it? They will draw nice pictures. Otherwise, from where did these pictures of Lakshmi-Narayan, of the deities come, that were prepared in the Copper Age? The pictures of all those who became kings were prepared.

Another student: Baba, it is said that everyone will be royal fools (*buddhu*) there; then how will they draw paintings?

Baba: Is it a big thing for a fool to draw paintings? Should someone be intelligent, clever to draw paintings?

समयः 12.20-13.02

जिज्ञासुः बाबा, शिवबाबा की बारात जब परमधाम को जावेगी तो पशु, पक्षी, कीट, पतंगों की आत्माएं भी जावेंगी या नहीं जावेंगी?

बाबाः सब आत्माएं जाएंगी। कोई भी आत्मा बचेगी नहीं। आत्मिक स्थिति में स्थित होने वाले भी जाएंगे और जो आत्मिक स्थिति में स्थित नहीं हुए होंगे वो धर्मराज की सज़ाएं खाकरके भी जाएंगे। कोई बुद्धियोग से जावेंगी और ढ़ेर की ढ़ेर शरीर छोड़करके जावेंगी।

Time: 12.20-13.02

Student: Baba, when Shivbaba's marriage party (*baaraat*) goes to the Supreme Abode, will the souls of the animals, birds, insects, and moths also go or not?

Baba: All the souls will go. No soul will be left behind. Those which become constant in soul conscious stage will go as well as those which haven't become constant in the soul conscious stage will go after suffering the punishments of Dharmaraj (the Chief Justice). Some will go through the connection of the intellect and numerous souls will leave their bodies and go.

समयः 13.08-14.40

जिज्ञासुः पावन आत्मा दु:ख नहीं भोगती है, सुख ही भोगती है हमेशा। (बाबाः हाँजी।) वैसे शिव तो सदा ही पावन है। फिर वो तो.....?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबाः सदा ही पावन कौन है सिवाय शिव के? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) शिव सदा ही पावन है, लेकिन, लेकिन वो तो शरीर ही धारण नहीं करता। तो जो शरीर जिसका अपना है ही नहीं वो जरूर न पुण्य करता है न पाप करता है। पुण्य करेगा तभी तो सुख भोगेगा। पाप करेगा तभी तो दुख भोगेगा। शिव तो ऐसी तुरीया आत्मा है जो ऐसी आत्मिक स्टेज में रहकरके कर्म करता है कि न पाप बनने देता है न पुण्य बनने देता है। वो सदैव साक्षी है। हम जो भी मनुष्यात्माएं हैं या और जो भी प्राणी मात्र हैं वो सुख-दुख देते हैं। इसलिए उनको सुख-दुःख भोगना पड़ता है। (जिज्ञासुः तो क्या सदा ही शांति में ही रहती है?) सदैव शान्ति में रहता है। यहाँ आता है, पतित दुनिया में आता है, पतित तन में आता है तो भी? शान्त रहता है या अशान्त रहता है? तो भी शान्त रहता है।

Time: 13.08-14.40

Student: A pure soul does not experience sorrow, it always experiences happiness. (Baba: Yes.) So, Shiva is always pure. Then He…..?

Baba: Who is ever pure except for Shiva? (Student said something.) Shiva is always pure, but, He does not take on a body. So, the One who not at all has a body of His own, definitely, He neither performs noble actions nor sins. He will experience happiness only if He performs noble actions. He will experience sorrow only when He commits sins. In fact, Shiva is such a unique (*turiya*) soul who performs actions while being in a soul conscious stage in such a way that He neither accumulates sins nor merits. He is always a detached observer (*saakshi*). All of us human souls or the other living creatures give happiness or sorrow. This is why we have to experience happiness and sorrow. (Student: So, does He always stay in peace?) He always remains in peace. He comes here, in this world, He comes in a restless world, He comes in a sinful world, a sinful body, yet? Does He remain peaceful or does He remain restless? He remains peaceful anyhow.

समयः 14.42-16.25

जिज्ञासुः बाबा, जैसे बाबा ने लक्ष्य दिया है नर से नारायण बनने का और नारी से लक्ष्मी बनने का। तो हर आत्मा अपना-अपना पुरुषार्थ कर रही है उसी लक्ष्य के लिए। तो उसको ये महसूस कब होगा कि वो नारायण बन गया है? या वो लक्ष्मी बन गई है? उसे सर्टिफिकेट कौन देगा?

बाबाः वो सारी सृष्टि जो भी प्रजा है इस मनुष्य सृष्टि में वो सब सर्टिफिकेट देगी कि ये हमारा विश्वपिता है। सबको अनुभूति होगी ये हमारा बाप है। नारायण पार्ट ही ऐसा है। जब प्रत्यक्ष होगा तो जिसके भी संपर्क-संसर्ग-संबंध में आवेगा उनको कल्याण का अनुभव होगा या अकल्याण का अनुभव होगा?

जिज्ञासुः एक नारायण की तो बात बाबा सही है। लेकिन बाबा ने तो सभी को ये लक्ष्य दिया है।

बाबाः सभी नारायण नंबरवार हैं। एक 100 परसेन्ट होता है बाकी नंबरवार होते हैं।

जिज्ञासुः नहीं, मेरा प्रश्न ये है कि वो आत्मा कैसे एहसास करेगी?

बाबाः वो आत्मा सबसे प्रूफ मिलेगा, सबसे वेरिफिकेशन मिलेगा। जो सामने आवेगा वो खुश हो जावेगा। सामने आने मात्र से ही, दो शब्द सुनने मात्र से ही, दृष्टि पड़ने मात्र से ही सुख की अनुभूति होगी।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 14.42-16.25
Student: Baba, Baba has given the aim to transform from a man to Narayan and from a woman to Lakshmi. So, every soul is making his *purushaarth* (spiritual effort) to achieve that very aim. So, when will he realize that he has become Narayan or that she has become Lakshmi? Who will give him the certificate?
Baba: The entire world, all the subjects in this human world will give a *certificate* that this is our World Father. Everyone will experience: this one is our father. The very *part* of Narayan is such [that] when he is revealed, will anyone who comes in his contact, connection and relation, experience benefit or harm? They will experience benefit.
Student: Baba, it is correct for one Narayan but Baba has given this aim to everyone.
Baba: All the Narayans are number wise[2]. One [Narayan] is 100 *percent*. The rest are number wise.
Student: No, my question is that how will that soul realize?
Baba: That soul will get *proof* from everyone; he will obtain *verification* from everyone. Whoever comes in front of him will become happy. Just by coming in front of him, just by listening two words [from him], just by his one look, people will experience joy.

समयः 16.26-16.58

जिज्ञासुः बाबा, बता रहे हैं कि चार साल बाद तक प्रलय हो जाएगा।

बाबाः कौन बता रहे हैं? (जिज्ञासु - टी.वी. में बताते है।) और लोगों ने कुछ नहीं बताया। जिन लोगों ने बताया उन लोगों पे विश्वास क्यों कर लिया? (जिज्ञासु: सही है या झूठ है?) आपको क्या लगता है? (जिज्ञासु: हमें झूठ लग रहा है।) क्यों बोल रही हो? जो झूठी बात है उसको भरी सभी में बोलने की भी क्या दरकार? आपके ऊपर प्रभाव पड़ा है इसलिए भरी सभा में बोल रहे हैं इसलिए कि बाबा वेरिफाय करें कि सही है कि झूठी है?

Time: 16.26-16.58
Student: Baba, people are telling that there will be *pralay*[3] after four years.
Baba: Who is telling this? (Student: It is shown on TV.) Didn't other people say anything? Why did you believe the people who said this? (Student: Is it true or false?) What do you feel? (Student: I feel that it is false.) Then, why are you speaking about it? What is the need to even narrate the topic that is false in a packed gathering? You are influenced by it; this is why you are speaking [about it] in a packed gathering so that you could have it verified from Baba: whether this topic is true or false?

समयः 17.00-18.50

जिज्ञासुः बाबा जैसे कोई-कोई ब्राह्मण आत्माओं की ये धारणा बन गई है कि ड्रामा बना-बनाया है। तो फिर हम पुरुषार्थ क्यों करें? जो हमारा पद बना हुआ है वो बन जाएगा।

बाबाः खाना क्यों खाते हो? पानी क्यों पीते हो? उसके लिए तो बड़ी जल्दी पहुँच जाएंगे। थाली लेकरके किचन में झट घुस जाएंगे। पुरुषार्थ क्यों करते हो खाना खाने का? हँ?

जिज्ञासुः ...जो हमें बनना होगा, पद पाना होगा...

[2] At different ranks according to their spiritual effort
[3] Dissolution of the world at the end of the cycle

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबाः हाँ, हाँ, तो खाना होगा तो अपने आप मुँह में चला जाएगा। काहे के लिए कमाई करना? क्यों धंधा-धोरी करना? उसके लिए नहीं सोचेंगे। पुरुषार्थ करने के लिए सोचेंगे। जब बना बनाया ड्रामा है तो हम काहे के लिए पुरुषार्थ करें? जो ड्रामा है वो मालूम है क्या ड्रामा बनने वाला है? जब मालूम ही नहीं है तो अच्छा सोचो, अच्छा करो, अच्छा बोलो तो अच्छा ही होगा। नेगेटिव करेंगे, नेगेटिव बोलेंगे, नेगेटिव सोचेंगे तो बुरा ही हो जाएगा।

जिज्ञासुः जब हम बोलते हैं कि अमृतवेला करो और बाबा को याद करो तो बोलती हैं, ये तो वैसे ही होगा जैसे ड्रामा में ।

बाबाः हाँ, तो उनका यही ड्रामा है। उनके ड्रामा में यही लिखा हुआ है। इसलिए पुरुषार्थ नहीं करते। जब ड्रामा में होगा तो पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे।

Time: 17.00-18.50

Student: Baba, some Brahmin souls have developed this practice [with the thought:] this drama is pre-determined, then why should we make *purushaarth*? We will attain the position that is pre-determined.

Baba: Why do they eat? Why do they drink water? They reach very fast for that. They will immediately enter the kitchen with a plate. Why do they make *purushaarth* to eat?

Student: …whatever we have to become, whatever post we have to achieve…

Baba: Yes, yes, then whatever has to be eaten will enter their mouth automatically. Why should they earn [money for that]? Why should they do business? They will not think [in this way] for that. They will think [this] with regards to making *purushaarth*: when the *drama* is pre-determined, why should we make *purushaarth*? As regards the *drama*, do they know what is going to happen in the *drama*? When they don't know at all, they should think good, do good, speak good then, only good will happen. If they perform *negative* [acts], speak *negative* [words], have *negative* thoughts, then it will only result in [something] bad.

Student: No, just like when we say them to do (remember at) *amritvelaa*[4] and remember Baba, they say: it will happen if it is in the *drama*.

Baba: Yes, so their *drama* is just this. This itself is written in their *drama* this is why they don't make *purushaarth*. They will also start making *purushaarth*, when it is fixed in the *drama* [for them].

समयः 18.55-20.42

जिज्ञासुः बाबा, शंकर को विष पीते हुए क्यों दिखाया गया है?

बाबाः इसलिए दिखाई पड़ा है क्योंकि कोई विष पी नहीं सकता। एक ही ऐसा है जो विष को पचाय सकता है। और किसी देवता में, 33 करोड़ देवताएं हों या कोई भी 500 करोड़ मनुष्य हों, उनमें से कोई में भी इतनी ताकत नहीं है कि विषय-विकारों के विष को पचाय सकें। थोड़ी भी ग्लानि होती है मुँह मुरझाय जाता है। (जिज्ञासु - कंठ में…।) कंठ में रखने का मतलब है उनके दिल में वो बात असर नहीं करती। औरों के दिल में वो बात असर कर जाती है। दिल खराब हो जाता है। पुरुषार्थ चौपट हो जाता है। पहले तो समझना है विष किसको कहा जाता है? विष कहा ही जाता है व्यभिचार को। पराई स्त्री, पराये पुरुष का सेवन ही विष है। और भगवान

[4] Early morning hours before the sunrise

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

का तो पार्ट है सभी के संग के रंग में आना। सबका विष पीने के बावजूद भी वो निर्विष रहता है। और?

Time: 18.55-20.42

Student: Baba, why is Shankar shown to be drinking poison?

Baba: He is shown like this because nobody can drink poison. There is only one [deity] who can digest poison. No other deity, whether they are the 33 crore (330 million) deities or any of the 500 crore (5 billion) human beings, none of them have the power to digest the poison of vices. Their face withers if they are defamed even a little. (Student: In the throat...) Keeping it (the poison) in the throat means, that topic [of defamation] does not affect his heart. That topic affects the heart of others. The heart feels bad. The *purushaarth* is ruined. First you have to understand, what does poison (*vish*) mean? Adultery (*vyabhicaar*) is called *vish*. Having pleasure with the wife or husband of someone else, itself is called poison. And it is God's *part* to come in the colour of the company with everyone. Despite drinking the poison of everyone, He remains free from poison (*nirvish*).

समयः 20.41-21.45

जिज्ञासुः बाबा, कुछ-2 आत्माएँ ऐसे तुलना करती हैं कि बाबा का जो पार्ट है विषय विकारों का विष पीने का, तो वो अष्ट देव भी प्रैक्टिकल में ये सब काम करेंगे।

बाबाः अष्ट देव कहेंगे? ऐसा कौनसी मुरली में कहा है कि अष्ट देव विष पीते हैं? (जिज्ञासु - बाप समान बनना है बोलते है।) मुरली में कहा है? (जिज्ञासु - नहीं।) जब मुरली में कहा ही नहीं है तो मानती क्यों? मुरली में तो ये कहा है शंकर जैसा, शंकर को फालो करेंगे तो नीचे गिरेंगे। शंकर को फालो नहीं करना है। फालो किसको करना है? ब्रह्मा को फालो करना है। ब्रह्मा ने जैसे कर्म किये, ब्रह्मा ने जैसी वाचा उच्चारी, ब्रह्मा ने जैसे दूसरी आत्माओं के प्रति संकल्प किये, शुभ भावना, शुभ कामना की ऐसा हमको भी करना है। अगर उल्टा करेंगे तो पुरुषार्थ डाउन होगा या नहीं होगा? पुरुषार्थ डाउन हो जाएगा।

Time: 20.41-21.45

Student: Baba, some souls compare Baba's part of drinking the poison of vices [with the eight deities and say] that the eight deities will also perform all these tasks in practice?

Baba: The eight deities will do… in which murli has it been said that the eight deities drink poison? (Student: People say that they have to become equal to the Father.) Has it been said in the murli? (Student: No.) When it has not been said in the murli, why do you believe it? In fact, it has been said in the murli that if you *follow* Shankar you will fall. You shouldn't *follow* Shankar. Whom should you *follow*? You have to *follow* Brahma. The actions that Brahma performed, the kind of speech Brahma spoke, the thoughts that Brahma created for other souls, the way he had good wishes and good feelings [for them], we too should do the same. If we act in the opposite way, will the *purushaarth* go *down* or not? The *purushaarth* will go *down*.

समयः 21.46-22.35

जिज्ञासुः बाबा, काम को देव क्यों कहा गया है जबकि वो तो पतन का बीज है?

बाबाः काम देव बनता है सतयुग त्रेता में। द्वापर कलियुग में देवता नहीं है। देव कहाँ होते हैं? देव तब है जब होइये कामो अनंग। वो काम का अंग काम ही नहीं करता। शीतल इन्द्रियाँ हो

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जाती हैं। तब उसको कहते हैं कामदेव। बाकी द्वापर कलियुग में देव थोड़ेही होते हैं। ये तो भक्तिमार्ग में कह दिया है।

Time: 21.46-22.35

Student: Baba, why is *Kaam* (desire) called a *dev* (deity) even though it is the step towards downfall?

Baba: *Kaam* becomes a deity in the Golden and the Silver Ages. He is not a deity in the Copper and the Iron Ages. Where do the deities exist? Deities exist when lust is bodiless (*hui hai kaam anang*.) That organ of lust does not work at all. The *indriyaan*[5] become calm. It is then that he is called *Kaamdev* (deity of lust). As for the rest, deities do not exist in the Copper and the Iron Ages. This has been said in the path of *bhakti* [that *Kaam* is a deity]. … (to be continued)

Part-3

समयः 22.39-23.50

जिज्ञासुः बाबा, कहते हैं जिसके अंदर भक्तिमार्ग के संस्कार होंगे, उनको शरीर छोड़ना पड़ेगा।

बाबा: हाँजी।

जिज्ञासु: कब की बात है?

बाबाः अभी की ही बात है। अभी संगमयुग की ही बात है।

जिज्ञासुः जैसे बाबा कहते हैं कि तोड़ निभाना है।

बाबाः हाँ, तोड़ निभाना माना जो लौकिक संबंधी हैं उनसे तोड़ के नहीं रखना है। कार्य व्यवहार में उनके साथ ऐसे सहयोग करना है जो ये न समझें कि इन्होंने हमसे तोड़ लिया जिन्दगी का नाता क्योंकि उनको भी तो ज्ञान में लेना है। जो अपना और अपने परिवार का, अपने संबंधियों का ही कल्याण नहीं कर सकता वो दुनिया का कल्याण कैसे करेगा? पहले अपनी जाति का कल्याण करना होता है ना।

Time: 22.39-23.50

Student: Baba, it is said that those who have the *sanskaars* of *bhakti* (devotion) will have to leave their body.

Baba: Yes.

Student: It is about when?

Baba: It is about the present time itself. It is about now the present Confluence Age itself.

Student: For example, Baba says that we have to maintain relationships.

Baba: Yes, to maintain the relationships means that you should not break away from the *lokik* relatives. You should cooperate with them in your dealings in such a way that they shouldn't think that you have broken the relationship of life with them because they too have to be brought to [the path of] knowledge. How can the one who cannot bring benefit to himself, to his family and his relatives themselves, bring benefit to the world? First you have to bring benefit to your community, haven't you?

[5] Parts of the body used to perform actions and the sense organs

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समयः 23.50-25.54

जिज्ञासुः बाबा, माता गुरु बिना उद्धार नहीं हो सकता। इसका क्लेरिफिकेशन।

बाबाः माता अव्वल नंबर कौन है? (जिज्ञासु: जगदंबा।) बस। जगदम्बा माता है या जगदम्बा में भी माता का पार्ट बजाने वाली सहनशक्ति की देवी कोई और आत्मा है, ब्रह्मा। वो जब तक संपन्न स्टेज न धारण करे और बाप की सहयोगी पूरी न बने तब तक कोई का भी कल्याण नहीं हो सकता। स्वर्ग के गेट नहीं खुल सकते।

जिज्ञासुः बाबा, स्वर्ग के गेट तो, बाबा कहते हैं कि जो स्वस्थिति में चला गया, वो स्वर्ग में चला गया।

बाबाः हाँ, पहले तो आत्मा ही स्वर्ग में, स्वस्थिति में जाएगी ना कि शरीर चला जाएगा? (किसी ने कहा - आत्मा जाएगी।) पहले आत्माओं का ऐसा संगठन बने कि वो खुशनुमा नज़र आएं। उनके संगठन रूपी जो माला है वो देखने में आए लोगों को कि इनके संस्कार आपस में मिले हुए हैं। कभी आपस में टकराते नहीं है।

Time: 23.50-25.54

Student: Baba, liberation (*uddhaar*) cannot be attained without the mother guru; please give the clarification for this.

Baba: Who is the *number* one mother? (Student: Jagadamba.) That is all. Is Jagdamba the mother or is there some other soul who plays the *part* of the mother, the *devi* of the power of tolerance even in Jagdamba? It is Brahma. Until he attains the perfect *stage* becomes helpful to the Father completely, nobody can be benefited. The gates of heaven cannot be opened.

Student: Baba, as regards the gates of heaven, Baba says that the one who has attained the stage of the self (*swasthiti*), has gone to heaven.

Baba: Yes, it is the soul that will go to heaven, will go in the stage of the self (*swasthiti*) first, won't it? Or will the body go [there]? (Someone said: The soul will go.) First, such a gathering of souls should be formed that they (all those in that gathering) should appear joyful. Their rosary like gathering should be visible to the people, [it should be visible to them] that their *sanskaars* are harmonized with each other. They never clash with each other.

दूसरा जिज्ञासुः लेकिन बाबा टकराहट तो बहुत ही हो रही है।

बाबाः बहुत ही टकराहट हो रही है तो जरूर बाप के बच्चे नहीं बने हैं। अभी रावण के बच्चे हैं तो आपस में लड़ते हैं।

जिज्ञासुः जब एक परिवार बनेगा फिर अलग-अलग दिशाओं में भाग रहे हैं (बाबाः हाँ, जी।) एक बनके रहना चाहिए।

बाबाः पता कैसे लगेगा कोई दूसरे धर्म में कनवर्ट होने वाला है या नहीं? हँ? आखरीन तक लड़ाई लड़ते रहेंगे तो पता चल जावेगा कि ये अपने धरम के नहीं हैं। ये बाप की औलाद नहीं हैं 84 जन्म लेने वाले। ये टकराने वाली आसुरी आत्मा है।

Second student: But Baba, a lot of clash is taking place.

Baba: When a lot of clash is taking place, definitely, they have not become the Father's children. They are still Ravan's children; so, they fight with each other.

Student: When one family has to be formed, all are running in different directions. (Baba: Yes.) They should remain united.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: How will you know whether someone is going to *convert* to other religion or not? If they keep fighting till the end, we will come to know that they do not belong to our religion. They are not the Father's children who have 84 births. They are demonic souls who clash [with each other].

समयः 26.00-26.38

जिज्ञासुः बाबा, अधिक खुशी हो तो भी आँखों से आँसू आ जाते हैं।

बाबाः अच्छी बात है ना।

जिज्ञासुः ऐसा क्यों बाबा?

बाबाः जो खुशी होती है बहुत दिन के बाद कोई मिलता है तो खुशी आती है ना। तो आँखों में आटोमेटिक आँसू आते हैं। रोता है। बाबा से भी बहुत लंबे समय तक बिछुड़ी हुई जो आत्माएं हैं, इस जनम में पहली बार मिलती हैं तो उनको आँसू आ जाते हैं क्योंकि बेहद की खुशी मिल गई।

Time: 26.00-26.38
Student: Baba, tears come in the eyes when we are very happy and when we are very sorrowful as well.
Baba: It is a good thing, isn't it?
Student: Baba, why is it so?
Baba: As regards happiness, if you meet someone after many days, you feel happy, don't you? So, tears come in the eyes automatically. You cry. Even the souls who have been separated from Baba for a long time and meet [Him] for the first time in this birth, tears come in their eyes because they receive unlimited happiness.

समयः 26.47-27.50

जिज्ञासुः ये सुख-दुःख का ड्रामा बना हुआ है। सुख-दुःख तो दिखाई देनेवाली चीज़ तो होती नहीं है।

बाबाः अनुभव करने की चीज़ नहीं होती? (जिज्ञासुः अनुभव की होती है। ।) हाँ। (जिज्ञासुः फिर आत्मायें सुखी महसूस क्यों नहीं करती? दुःख महसूस क्यों करते है?) क्योंकि दुःख की दुनिया है, दुःख का राज्य है। रावण का राज्य है या राम राज्य है? ये दुःखधाम है या सुखधाम है? (सबने कहाः दुःखधाम।) तो दुःखधाम में क्या अनुभव करेंगे? दुःख का ही अनुभव करेंगे। सुखधाम राम बनाता है, दुःखधाम रावण बनाता है। अनेक की मत से बनता है दुःखधाम। और एक की मत पर चलने से बनता है सुखधाम।

Time: 26.47-27.50
Student: This drama of happiness and sorrow is preordained. Happiness and sorrow are not something that can be seen.
Baba: Aren't' they something that can be experienced? (Student: They are something that can be experienced.) Yes. (Student: Then why do the souls don't experience happiness? Why do they experience sorrow?) It is because, it is the world of sorrow, the kingdom of sorrow. Is it the kingdom of Ravan or the kingdom of Ram? Is this the Abode of Sorrow or the Abode of Happiness? (Everyone said: Abode of Sorrow.) So, what will you experience in the Abode of Sorrow? You will experience only sorrow. Ram creates the Abode of Happiness and Ravan

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

creates the Abode of Sorrow. Many opinions lead to the formation of the Abode of Sorrow and when we follow the opinion of the One, it leads to the formation of the Abode of Happiness.

समयः 28.06-29.38

जिज्ञासुः बाबा, मुरली में बोला है तुम बच्चों के ये आँसू विजयमाला के दाने बनेंगे।

बाबाः हाँ, जी। खुशी के आँसू आते हैं तो खुशी के आँसू क्या बनावेंगे? वायब्रेशन खुशी का बनता है या दुःख का वायब्रेशन बनता है? सुख का वायब्रेशन बनता है। जो सदैव सुख का वायब्रेशन में डूबा रहेगा वो जरूर विजयमाला में आवेगा क्योंकि संगमयुग जो है उसमें ये राज़ भरा हुआ है। संगमयुग है मौजों की दुनिया। लेकिन जो भी ज्ञान में चलने वाले हैं, सदैव मौज में रहते हैं? रहते हैं? नहीं रहते। तो अज्ञान है या ज्ञान है? अज्ञानी हैं तो दुःखी होते हैं। अगर ज्ञान बुद्धि में अच्छी तरह बैठा हुआ है, आत्मा बने हैं, तो हर परिस्थिति को हर समस्या को ज्ञान के आधार पर साल्व कर लेंगे। परिस्थिति पर स्वस्थिति से विजय प्राप्त कर लेंगे।

Time: 28.06-29.38

Student: Baba, it has been said in the murli that these tears of you children will become the beads of the *Vijaymaalaa* (the rosary of victory).

Baba: Yes. The tears of joy that come… so, what will the tears of joy lead to? Does it lead to the formation of vibrations of joy or the vibrations of sorrow? It leads to formation of vibrations of joy. The one who always remains immersed in the vibrations of happiness, will definitely come in the *Vijaymaalaa* because there is secret in the Confluence Age. The Confluence Age is a world of enjoyment (*maujon ki duniyaa*). But do all those who follow knowledge always experience joy? Do they? They do not. So, is it ignorance or knowledge? If they are ignorant they feel sorrowful. If the knowledge has sat in the intellect properly, if they have become souls, then they will *solve* (overcome) every circumstance, every problem with the help of the knowledge. They will gain victory over *paristhiti* (circumstance) through *swasthiti* (stage of the self).

समयः 29.40-30.12

जिज्ञासुः बाबा, जब रोज़े रखते हैं मुसलमान लोग तो रात को 4-5 बजे खाना खा लेते हैं। फिर रोज़ा कैसा...?

बाबाः ☺ वो तो हिन्दुओं में भी चलता है। उपवास रखते हैं तो कहीं आलू खा लेते हैं। कहीं फल खा लेते हैं। तो उनका कैसे चलता है? अरे मुसलमान हैं तो मुसलमानों जैसा ही उनका उपवास होगा।

Time: 29.40-30.12

Student: Baba, the Muslims observe fast (*roza*). So, they eat food at 4-5 pm in the night. Then how is it a fast?

Baba: ☺ That happens among the Hindus as well. When they observe fast (*upvaas*), sometimes they eat potatoes, sometimes they eat fruits. So, how do they manage? *Arey*, when they are Muslims, their fast will be just like the Muslims.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समयः 30.15-31.50

जिज्ञासुः बाबा, बिना भय के प्रीत पैदा नहीं होती है। बिन भय होय न प्रीत गुंसाई, ऐसा बोला है ना। तो सबके लिए ऐसा ही होता है?

बाबाः एक विस्तार की बात बता दी जनरल बात। स्पेशल आत्माओं के लिए ये बात नहीं है। जो स्पेशल पुरुषार्थ करने वाले हैं वो कितने हैं? आठ। वो तो जबसे ज्ञान में आए होंगे, ज्ञान में आने मात्र से ही उनका देहधारियों से मोह नष्ट होने लगता है। ईश्वरीय सेवा में ही अपने को जुटाए रखते हैं। वो जनरल बात बताई।

जिज्ञासुः तो भय के कारण जो प्रीत पैदा होगी वो तो स्वार्थयुक्त हो गई ना।

बाबाः स्वार्थी है ना सारी दुनिया। सारी दुनिया क्या है? स्वार्थी है या परमार्थी है? सुर नर मुनि सबकी यह रीति। स्वार्थ लागी करैं सब प्रीति। सब स्वार्थ के आधार पर प्यार करते हैं।

जिज्ञासुः हद की दुनिया में माना लौकिक दुनिया में...

बाबाः लौकिक दुनिया में भी है तो अलौकिक दुनिया में भी है।

Time: 30.15-31.50

Student: Baba, love [for God] doesn't develop unless they have fear. It is said, 'there cannot be love without fear', isn't it? So, is this applicable to everyone?

Baba: It was said on the whole, in *general*. This is not applicable to the special souls. How many [souls] make *special purushaarth*? Eight. Ever since they will have entered the path of knowledge, as soon as they enter the path of knowledge, their attachment for the bodily beings is gradually removed. They keep themselves busy only in the service of God. So, a *general* topic was mentioned.

Student: So, the love that develops because of fear is full of selfishness, [isn't it?]

Baba: So, the entire world is selfish, isn't it? How is the entire world? Is it selfish (*swaarthi*) or is it charitable (*parmaarthi*)? [It is said:] *Sur*, *nar*, *muni*, *sabki yah riiti*; *swaarath laagi karein sab priiti*[6]. Everyone loves out of selfishness.

Student: In the limited world, i.e. in the *lokik* world...

Baba: It is the case in the *lokik* world as well as in the *alokik* world.

समयः 32.00-33.05

जिज्ञासुः बाबा, जैसे गीतापाठशाला में मुरली चलती है। उसके बाद सब भाई और माताएं प्वाइंट सुनाते हैं और उसका अर्थ क्लीयर करते हैं। क्या ये उचित है या नहीं?

बाबाः वेरिफिकेशन कौन देगा? (जिज्ञासु: अपने से जो सिनियर...) वेरिफाय कौन करेगा क्या सच्चा है क्या झूठा है?

जिज्ञासुः यानि ऐसा होता है जैसे क्लास चली , बाबा के प्वाइंट तो लगभग समझ में आते हैं, लेकिन फिर भी कोई प्वाइंट्स ऐसे होते हैं जो अपने को क्लीयर नहीं हो पाते।

बाबाः हाँ, तो जो क्लीयर नहीं होता है और किसी ने क्लीयर कर दिया, क्लास में ढ़ेरों ने क्लीयर नहीं किया। तो जिसने क्लीयर कर दिया, वो स्वार्थ बुद्धि के आधार पर क्लीयर किया

[6] It is a practice among the deities, human beings, sages and everyone that they love out of selfish motives.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

या निस्वार्थ बुद्धि से क्लीयर किया होगा? (जिज्ञासु - स्वार्थ।) फिर? इसलिए जो डिस्कशन है वो बेकार हो जाता है। फिर अनेक मतें पैदा हो जाएंगी। गुरुडम शुरु हो जाएगा।

Time: 32.00-33.05

Student: Baba, the murli is played in the *Gita paathshaalaa.* And after that all the brothers and mothers narrate points [of that murli] and make their meanings clearer. Is this correct or not?

Baba: Who will give the *verification*? (Student: Our seniors…) Who will *verify*, what is true and what is false?

Student: I mean it happens in this way: when the *class* is played, almost all the points [narrated] by Baba are understood still, there are some points which are not clear to us.

Baba: Yes, so the [points] which were not *clear* and someone made it *clear*; numerous persons in the *class* did not make it *clear*. So, the one who made it *clear*, did he make it *clear* out of a selfish intellect or will he have made it *clear* with a selfless intellect? (Student: With a selfish intellect.) Then? This is why the *discussion* goes to waste. Different opinions will arise. *Gurudom*[7] will begin.

समयः 33.06-34.08

जिज्ञासुः बाबा, बेहद में बाइस्कोप देखना माना क्या?

बाबाः बाइस्कोप माना जो फिल्म है वो एक तो टीवी में देखते हैं। टीवी में तो घर-परिवार के ही लोग बैठे होते हैं। वो घर-परिवार ज्ञानियों का भी हो सकता है। ज्ञानियों अज्ञानियों का मिक्स भी हो सकता है। उसमें वायब्रेशन इतने ज्यादा खराब नहीं होते। लेकिन जो सिनेमा हॉल में फिल्म दिखाई जाती है उसमें बड़े-बड़े गंदे लोग आ जाते हैं। उनके वायब्रेशन बुद्धि को खराब करेंगे या अच्छा बनावेंगे? (किसी ने कहा - खराब।) सबकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। इसलिए उसको कहते हैं बाइस्कोप। ऐसे तो फिल्म घर में भी बैठ करके नहीं देखना चाहिए।

Time: 33.06-34.08

Student: Baba, what is meant by seeing bioscope in the unlimited?

Baba: *Bioscope* means films. One way to watch it is on the TV. [While watching it on] TV, only the members of the family are sitting. That family can be of knowledgeable persons. It can also be mixed [i.e.] with the knowledgeable as well as ignorant persons. In that case, the vibrations are not spoilt to that extent. But in case of the films shown in the *cinema hall*, very dirty people come there. Will their vibrations spoil the intellect or will they make it good? (Someone said: Bad.) Everyone's intellect becomes corrupt. This is why it is called *bioscope*. In a way, films should not be watched even while sitting at home.

समयः 34.10-35.08

जिज्ञासुः जो प्रापर्टी झगड़े से ली है वो झगड़े में ही खराब हो जाती है। ये बेहद में कैसे होगा?

बाबाः आगे चलके झगड़े होंगे, बढ़ेंगे या घटेंगे? (जिज्ञासु - बढ़ेंगे।) फिर? झगड़े बढ़ते जा रहे हैं प्रापर्टी के या कम होते जा रहे हैं? (जिज्ञासु - बढ़ते जा रहे हैं।) इतने-इतने झगड़े बढ़ेंगे, इतनी-इतनी बीमारियाँ बढ़ेंगी कि न हॉस्पिटल रहेंगे और न कोर्ट रहेंगे।

जिज्ञासुः ब्राह्मणों की प्रापर्टी तो प्यूरिटी है ना?

बाबाः ब्राह्मणों की प्रापर्टी तो प्यूरिटी है। तो?

[7] The rule of gurus

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः तो वो कैसे खलास होगी?

बाबाः वो कैसे खलास होगी? जिन्होंने प्योरिटी का निर्वहन नहीं किया होगा, एक बाप से संग नहीं जोड़ा होगा, अनेकों के संग के रंग मं रंग रहे होंगे तो प्यूरिटी खंडित की या अखण्ड रही? खण्डित कर दी। फल भी वैसा ही मिलेगा।

Time: 34.10-35.08

Student: The *property* that has been obtained through [having] disputes will be destroyed in the disputes itself. How will this happen in the unlimited?

Baba: Will disputes take place in future, will they increase or decrease? (Student: They will increase.) Then? Are the *property* disputes increasing or decreasing? (Student: They are increasing.) The disputes will increase so much, the diseases will increase so much that neither there will be hospitals nor will there be courts.

Student: The property of Brahmins is purity, isn't it?

Baba: The *property* of Brahmins is *purity*. So?

Student: How will that be destroyed?

Baba: How will that be destroyed? Those who have not maintained *purity*, those who will not have established connection with the One Father, those who will be coloured by the company of many, did they ruin *purity* or did it remain constant? They ruined it. They will also receive the fruits [of the deeds performed] accordingly.

समयः 35.14-36.55

जिज्ञासुः जैसे क्लास चलता है, संगठन क्लास चल रहा है मधुबन में और सभी लोग मोबाईल लेकरके आते हैं। (बाबाः हाँ, जी।) तो कहीं से फोन आता है तो क्लास में ही बात करने लग जाते हैं। तो उनका मधुबन में जमा करवाना चाहिए कि नहीं करना चाहिए?

बाबाः अच्छी बात तो यह है कि अपना मोबाईल बंद करके रखें, अपने आप ही। (जिज्ञासु - नहीं करते हैं।) बंद करके नहीं रखते हैं तो एक टाइम ऐसा भी आएगा कि आर्डर निकालना पड़ेगा कि जो भी अंदर आते जाएं उनका मोबाईल लेते जाओ। कई मिनी मधुबनों में ऐसा चल भी रहा है।

जिज्ञासुः कभी क्लास चलता है और वो बात करना शुरू कर देते हैं वहीं बैठे-2।

बाबाः हाँ, तो टीचर का रिगार्ड नहीं है ना। अपने धंधेधोरी का रिगार्ड ज्यादा है। इससे क्या साबित हुआ? (जिज्ञासु - बाप के बच्चे नहीं हैं।) बाबा ने तो मुरली में यहाँ तक कहा है कि जब मुरली सुनते हैं तो कोई दूसरा काम नहीं करना चाहिए। दत्तचित्त होकरके मुरली सुनना है, एकाग्र होकरके। इसीलिए पहले याद में बैठाया जाता है ताकि बुद्धि एकाग्र हो जाए। एकाग्र हुई बुद्धि में ज्ञान की बातें अच्छी बैठेंगी।

दूसरा जिज्ञासुः बाबा प्वाइंट्स नोट भी नहीं करना चाहिए?

बाबाः क्यों नहीं नोट करना चाहिए? जिनको याद नहीं रहता है वो नोट करें। बुद्धि रूपी डायरी जिनकी तीखी नहीं है तो नोट भी नहीं करेंगे तो रिवाइज़ कैसे करेंगे?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 35.14-36.55
Student: When the *class* is conducted, when the *sangathan* class (gathering) is going on in the Madhuban, everyone brings his mobile. (Baba: Yes.) So, when they receive a phone call from somewhere, they start talking in the class itself. So, should [their phone] be collected at Madhuban or not?
Baba: It is better if they keep their mobiles switched off voluntarily. (Student: They don't.) If they do not switch it off, a *time* like this will also come when an *order* will have to be issued that the mobiles of all those who come inside [the Madhuban] should be collected. It is also going on like this in many *mini* madhubans.
Student: Sometimes, when the *class* is going on, they start talking sitting there itself.
Baba: Yes so, they do not have *regard* for the *Teacher*, do they? They have more *regard* for their occupation. What does it prove? (Student: They are not the Father's children.) Baba has said to this extent in the murli that when you are listening to the murli, you should not do any other work. You should listen to the murli attentively, with concentration. This is why you are made to sit in remembrance first, so that the intellect becomes focused. Topics of knowledge will sit properly in the focused intellect.
Another student: Baba, should we not even note the points?
Baba: Why shouldn't you note? Those who cannot remember [the points] should *note* it down. If those whose *diary* like intellect is not sharp do not even *note* it down, then how will they *revise* [those points]?

समयः 36.58-37.45

जिज्ञासुः अभी जो करोड़पति हैं वो अंत में गरीब बन जावेंगे - एक मुरली में बोला। (बाबाः हाँ, जी।) तो बाबा वो ज्ञान से कैसे गरीब बन जावेंगे ?

बाबाः ज्ञान से कैसे टैली करेंगे? उल्टा-उल्टा ज्ञान सुनाएंगे तो गरीब बन जाएंगे। ज्ञान देह अभिमान को खतम करने के लिए हैं या देह अभिमान को बढ़ाने के लिए है? (जिज्ञासुः खत्म करने के लिए।) अगर कोई देह अभिमान को बढ़ाने वाला ज्ञान सुनाता है तोड़-मरोड़ के तो रिजल्ट क्या होगा? (जिज्ञासु - ज्ञान उड़ जावेगा।) हाँ। अपना भी सत्यानाश होगा। औरों का भी सत्यानाश होगा।

Time: 36.58-37.45
Student: It was said in a murli that those who are millionaires now, will become poor in the end. (Baba: Yes.) So Baba, how will they become poor with respect to the knowledge?
Baba: How will they become poor with respect to the knowledge? If they narrate opposite knowledge, they will become poor. Is the knowledge meant to finish body consciousness or to increase body consciousness? (Student: To finish it.) If someone narrates knowledge that increases body consciousness by misinterpreting it, then what will be the *result*? (Student: The knowledge will vanish.) Yes. He himself will be ruined as well as the others will be ruined. … (to be continued)

Part-4

समयः 37.47-42.08

जिज्ञासुः बाबा, गीता पाठशाला में कम से कम कितना टाइम क्लास करना चाहिए?

बाबाः आधा घण्टा याद। सबको पूछना है कि ज्यादा से ज्यादा कितना टाइम दे सकते हैं?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः बाबा, जो आता है और 15 मिनट बाद चले जाता है। हमारे पतिदेव को चाय बनाना है, फलाना करना है। क्लास में बैठती ही नहीं है। कैसे...?

बाबाः वो पंक्चुअल नहीं है। वो पंक्चुअल स्टूडेन्ट की लिस्ट में नहीं है बाबा की दृष्टि में। (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) हाँ, हाँ, ठीक है, जो पंक्चुअल नहीं है वो पद भी ऐसा ही पावेंगे। बाबा की पढ़ाई जो रेगुलर पढ़ेंगे, और पंक्चुअल पढ़ेंगे, रेगुलर माना रोज़ क्लास में आना। अगर दूर रहते हैं तो सप्ताह में दो बार आएँ, एक बार आएं, लेकिन आएं जरूर। उनको कहेंगे रेगुलर। बहुत दूर रहते हैं तो महीने में एक बार तो जरूर आएं।

Time: 37.47-42.08

Student: Baba, what is the minimum duration of organizing class in the *Gita paathshaalaa*?

Baba: Remembrance for half an hour. It should be asked to everyone, how much *time* can they devote at the most?

Student: Baba, [some] come and depart after 15 minutes [and] say: I have to prepare tea for my husband; I have to do this and that. They do not sit in the class at all. How…?

Baba: They are not *punctual*. They are not in the *list* of *punctual* students from Baba's point of view. (Student said something.) Yes, yes, alright, those who are not *punctual* will also get a post accordingly. Those who study Baba's knowledge regularly and punctually… *regular* means to come to the *class* daily. If they live far away, then they should come twice a week [or] once a week, but they should come without fail. They will be called [to be] *regular*. If they live very far away, they should definitely come once in a month.

जिज्ञासुः नहीं, एक ही गांव में रहती हैं और गीतापाठशाला ऐसे हैं कि सब आत्माएं आसपास में ही रहते हैं। तो कोई ये कहते हैं कि हमारा लड़का मना करता है, हमारे पतिदेव गुस्सा हो जाते है। तो बाप आए है, उनको जानते भी है, अच्छे से चलते भी है। इसके बाद जब बाबा यहाँ आते है, सीहोर, तो भी उनको टाइम नहीं मिलता है। कहते है, हमारी समस्या है, पैसा नहीं है या टाइम नहीं है।

बाबाः हाँ तो ज्ञान का महत्व और बाप की पहचान जितनी गहराई से बैठी होगी उतना ही फॉलो करेंगे ने। उनको नाक पकड़ के चलाएंगे? (जिज्ञासुः नहीं ऐसे तो नहीं बाबा। मुँह से तो बोलते ही है, मतलब अच्छा बोलते है...) बोलने से कोई फायदा नहीं। सहज-सहज चलने दो। हमारा जो ज्ञान योग है वो सहज ज्ञान, सहज राजयोग है। किसी के ऊपर कोई जोर जबरदस्ती नहीं। जो काम दूसरे नहीं करते हैं वो हम पक्का होकरके करके दिखाएं।

दूसरा जिज्ञासुः तो फिर बाबा, डेढ़ घंटे की क्लास हो जाएगी।

बाबाः आधा घंटा याद में बैठें। एक घंटा मुरली चलाएं। आधा घंटा जो डिस्कशन का क्लास है वो सुन लें। इतना तो बहुत काफी है। अगर सब कहते हैं हम दो घंटा टाइम नहीं दे पाएंगे तो आधा घंटा याद में बैठें। आधा घंटा मुरली सुनें। आधा घंटा डिस्कशन सुन लें। (यदि) क्लास के सभी लोग कहते हैं डिस्कशन में हमें इतना मज़ा नहीं आता है, हम नहीं सुनना चाहते हैं तो कभी-कभी डिस्कशन का क्लास चला दे ।

Student: No, they stay in the same village and the *Gita paathshaalaa* is located in such a place that all the souls live nearby. So, some say that their son stops them [from coming], their husbands scold them. They do know that the Father has come, they also follow [the knowledge]

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

properly, but later, when Baba comes here, in Sehore, they do not get time. They say: we have this problem, we don't have money, we don't have time.
Baba: Yes, so, they will *follow* only to the extent they will have understood the importance of knowledge and recognized the Father. Will you make them walk by holding their nose (forcibly)? (Student: No Baba, it is not so. They do say through their mouth, I mean, they say: [this knowledge is] good…) There is no use of [just] saying. Let them follow [the knowledge] easily. Our knowledge and *yoga* is easy knowledge, easy Raja Yoga. There is no compulsion on anyone. We should firmly perform the tasks that others do not perform and set an example.
Second student: So Baba, the class will be for one and a half hour.
Baba: Sit in remembrance for half an hour. Play the murli for an hour. Listen to the *discussion class* for half an hour. This much is more than enough. If everyone says that they will not be able to devote two hours, then sit in remembrance for half an hour, listen to the murli for half an hour [and] listen to *discussion* for half an hour. If everyone in the *class* says that they do not enjoy the *discussion* much, they do not want to listen to it then, play the *discussion class* occasionally.

दूसरा जिज्ञासुः जैसे बाबा डिस्कशन का क्लास शाम को होता है।
बाबाः ठीक है।
दूसरा जिज्ञासुः एक घंटे का वार्तालाप होता है।
बाबाः वो तो सबके ऊपर, आने वाले स्टूडेन्ट्स के ऊपर है ना।
तीसरा जिज्ञासुः बाबा, एक घंटा योग और एक घंटा मुरली चला सकते है ना।
बाबाः एक घंटा योग जब रखोगे, सामने बाबा तो होता नहीं है। सामने टी.वी. होती है। और बुद्धि लोगों की इधर-उधर चलती रही तो वायब्रेशन खराब होगा क्लास का या अच्छा बनेगा? (जिज्ञासु - खराब।) इसलिए कम करो लेकिन अच्छा करो।
चौथा जिज्ञासुः बाबा, कई लोग जरा-जरा में रूठ करके अपने घर चले जाते हैं।
बाबाः क्या? (सबने कहा: नाराज़ हो जाते है, गुस्सा हो जाते है।) जरा-जरा में? (सबने कहा: नाराज़ हो जाते है।) नाराज़ हो जाते है? (किसी ने कहा: हाँ, चले जाते है।...) तो जितना संतुष्ट कर सको उतना करो। ब्राह्मण परिवार के लिए जो जितना मरेगा, सहन करेगा, उतना पद की प्राप्ति करेगा। यहाँ सहन करेगा, वहाँ सहन कराने के निमित्त बनेगा।
Second student: Baba, for example, the discussion class is played in the evening.
Baba: Okay.
Second student: There is the discussion class for one hour.
Baba: So, it depends on everyone, it depends on the students who come, doesn't it? **Third student:** Baba, we have *yog* for one hour and murli [class] for one hour, can't we?
Baba: When you organize *yog* for an hour, Baba is certainly not in front of you. The TV is in front of you. And if the intellect of people keeps wandering here and there, will the vibrations of the *class* be spoilt or will it become good? (Student: It will be spoilt.) This is why organize [the class] for lesser time but do it properly.
Fourth student: Baba, many people get displeased over trivial reasons and go to their house.
Baba: What? (Everyone said: They are displeased, they become angry.) For trivial reasons? (Everyone said: They get displeased.) They get displeased? (Someone said: Yes, and they go away…) So, satisfy them as much as possible. Whoever sacrifices [himself] for the Brahmin family to whatever extent; the more someone tolerates, the higher the post he will achieve. The

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

one who tolerates here (in the Confluence Age) will become the instrument to make them tolerate there (in the broad drama).

समयः 42.14-43.52

जिज्ञासुः बाबा, क्लास हम 5 बजे से 7 बजे तक करते हैं तो...

बाबाः 5 बजे सर्दियों में अंधेरा होता है।

जिज्ञासुः हाँ बाबा, और हमारा घर भी दूर है।

बाबाः हाँ, तो अंधेरे में क्लास नहीं करना।

जिज्ञासुः तो बाबा बोलते हैं कि दो घंटा क्लास करना चाहिए। तो फिर घर जाते हैं तो घरवाले डांटते हैं, हम दो घंटा क्लास करते है तो।

बाबाः हाँ, हाँ, तो उतना काम करो जितना घरवाले न डांटें।

जिज्ञासुः बाबा तो बोलते दो घंटा क्लास करो। फिर कैसे करें?

बाबाः अरे बाबा बोलते हैं। बाबा ये भी तो बोलते हैं कि घरवालों से तोड़ निभाओ।

जिज्ञासुः तो बाबा चार बजे से नहीं कर सकते?

बाबाः चार बजे अंधेरा होता है। कन्याएं भी क्लास में आती हैं। कन्याओं को अकेला छोड़ा जा सकता है क्लास में जाने के लिए? (जिज्ञासु - नहीं।) फिर? इसलिए जब झुटपुटा होता है, दूर का आदमी साफ दिखाई पड़ता है चेहरा, उस समय क्लास शुरू होना चाहिए।

Time: 42.14-43.52

Student: Baba, if we attend the *class* from 5 to 7 [AM]...
Baba: During the winters, it is dark at 5 AM.
Student: Yes Baba, and my home is far away as well.
Baba: Yes, so don't attend the *class* when it is dark.
Student: But Baba says that we should attend class for two hours. So, when I return home, the members of my family scold me if I attend the class for two hours.
Baba: Yes, yes, so perform the task [of attending class] to the extent the family members don't scold you.
Student: Baba says that we should attend class for two hours. Then, how should we manage?
Baba: *Arey*, Baba says [so]. [But] Baba also says that you should maintain relationship with the members of the family.
Student: So Baba, can't it (the class) be organized from 4 AM?
Baba: It is dark at 4 AM. Virgins also come to the *class*. Can the virgins be allowed to go to the *class* alone? (Student: No.) Then? This is why when it is dawn, when the face of people is clearly visible from a distance; the *class* should start [at that time].

जिज्ञासुः फिर बाबा दो घंटे की तो नहीं कर पाएंगे।

बाबाः तो न करो। जितना सहज रूप से कर सकते हो उतना करो। बाकी घर में जाके पुरुषार्थ कर लो।

जिज्ञासुः पांच बजे तो काम पे जाना होता है।

बाबाः हाँ, हाँ, तो अपने काम में लग जाओ। (क्लास) छोड़ दो। रोटी दाल बनाना शुरू कर दो। ☺

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: Then Baba we will not be able to attend [the class] for two hours.
Baba: So, don't attend. Do as much as you can do easily. And make the remaining *purushaarth* after going home.
Student: We have to go to work at 5 AM.
Baba: Yes, yes, so start doing your work. Leave [the class]. Start cooking *roti* and *daal.* ☺

समयः 43.59-45.20

जिज्ञासुः बाबा, तीजा का उपवास छोड़ने से ...?

बाबाः किसका उपवास करते हैं? (सभी ने कहा - तीजरे की।) हाँ, जी। (किसी ने कहा - कह रहे है कि छोड़ दे क्या? ।) बाबा कुछ भी छोड़ने के लिए मना नहीं करते। बाबा तो कहते हैं भक्तिमार्ग में... अगर बुद्धि ज्ञान में नहीं अटकती है तो खूब भक्ति करो। जब ज्ञान बुद्धि में बैठ जाएगा तो भक्ति के सारे आडंबर छूट जाएंगे। इसलिए कोई को भक्ति करने के लिए मना ही नहीं करना।

Time: 43.59-45.20
Student: Baba, if we stop observing the fast of *tiij*[8] …?
Baba: Which fast? (Everyone said: Of *Tiijra*.) Yes. (Someone said: She is asking, should she stop observing it.) Baba does not forbid you to leave anything. In fact, Baba says, in the path of *bhakti*… if the knowledge doesn't sit in your intellect then, do a lot of *bhakti*. When the knowledge sits in the intellect, all the ostentations of *bhakti* will vanish. This is why you should not at all stop anyone from doing *bhakti*.

जिज्ञासुः बाबा, ऐसा कहते है कि तीज का उपवास छूटना नहीं चाहिए। शरीर रहे जब तक करना।

बाबाः शरीर रहे तब तक करना? (जिज्ञासु - हाँ।) किसने कहा?

जिज्ञासुः बाबा भक्तिमार्ग में।

बाबाः भक्तिमार्ग वालों की बातें माननी हैं? मुरली में तो नहीं कहा। (जिज्ञासु - नहीं।) फिर बाबा मना भी नहीं करते। तुम्हें करना अच्छा लगता है तो करो। खूब करो। दूसरों को भी भक्ति करने के लिए कभी मना नहीं करना चाहिए।

Student: Baba, they say that we should never stop observing the fast of *tiij*; we should observe it until we are alive.
Baba: You should observe it as long as you are alive? (Student: Yes.) Who said this?
Student: Baba, in the path of *bhakti*.
Baba: Should you listen to the people of the path of *bhakti*? It isn't said in the murli, is it? (Student: No.) And Baba does not stop you either. If you like doing [*bhakti*] then do it; do a lot [of *bhakti*]. You should not stop others from doing *bhakti* either.

समयः 45.25-45.55

जिज्ञासुः बाबा ये क्लास चलता है तो उसमें कोई अपने पर्सनल कार्य के लिए उठ जाता है। तो इसमें बाबा का डिसरिगार्ड होता है। तो जैसे मधुबनों में सेवाधारियों को उठना पड़ता है यज्ञ सेवा के लिए…

[8] Name of a festival

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबाः पर्सनल काम जरूरी है। घर में लड़का बीमार पड़ा है, हॉस्पिटलाइज़्ड है। तो काम देखा जाता है ना। उस समय छुट्टी लेकरके टीचर की चला जाए।

Time: 45.25-45.55

Student: Baba, when the class is going, some get up for their personal tasks. So, this brings the disregard of Baba. So, for example, the *sevadharis* (servants) have to leave for the purpose of the service of the *yagya*...

Baba: If the *personal* task is important, [if someone's] son is sick at home; he is hospitalized [then he will have to leave]. So, the task is seen, isn't it? At that time, he can take leave from the *teacher* and depart.

समयः 45.58-47.03

जिज्ञासुः बाबा, माताएं पूछना चाहती हैं कि गीतापाठशाला बाजू में ही हैं, मतलब डर नहीं है कुछ। तो जा सकती है चार बजे से क्लास करने ?

बाबाः गीतापाठशाला?

जिज्ञासुः मतलब डर नहीं है कोई भी। जा सकती हैं कि नहीं अगर चार बजे से क्लास करना चाहे?

बाबाः डर नहीं है?

जिज्ञासुः पास में ही है।

बाबाः हाँ, अरे तुम्हारे अकेले के लिए ही सोचना है क्या? जो दूर से आते हैं उनके लिए नहीं सोचना? इतनी स्वार्थबुद्धि? (किसी ने कहा - ये कह रही है कि दूर से नहीं आती।) उनका कहना है कि क्लास नज़दीक है तो हम क्लास जल्दी कर सकते हैं कि नहीं? तो अपने ही लिए सोचना है? जो दूर से आते हैं उनके लिए नहीं सोचना है? (किसी ने कहा - हाँ, वो कह रही है दूर से कोई नहीं आता।) ऐसी कोई बात नहीं है। दूर से भी आते हैं, नज़दीक से भी आते हैं।

जिज्ञासुः बाबा सब पास ही में हैं।

बाबाः क्या पास में है?

जिज्ञासुः सब आत्मायें।

बाबाः अरे एक आदमी के लिए दरवाज़ा-दरवाज़ा सामने होगा। सबके लिए सामने होगा क्या?

Time: 45.58-47.03

Student: Baba, the mothers want to ask that the *Gita paathshaalaa* is located next door; I mean there isn't any kind of fear. So, can they go to attend the class from 4 AM?

Baba: *Gita paathshaalaa*?

Student: I mean to say there is no kind of fear. Can they go or not if they wish to attend the class from 4 AM?

Baba: There is no fear?

Student: It is located nearby.

Baba: Yes, *arey,* should you think only about yourself? Shouldn't you think of those who come from distant places? You have such a selfish intellect! (Someone said: She is saying that [the mothers] don't come from distant places.) She wants to ask that [the place of organizing] the *class* is located nearby; so can she organize the class early or not? So, should she think [only] about herself? Shouldn't she think of those who come from distant places? (Someone

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

said: Yes, she is saying that no one comes from distant places.) It is not so. People come from distant places as well as nearby places.
Second student: Baba, everyone lives nearby.
Baba: Who are nearby?
Student: All the souls [who come for the class].
Baba: *Arey*, the doors can be nearby in case of one person. Will it be next door for everyone?

समयः 47.10-47.52

जिज्ञासुः बाबा, भक्तिमार्ग की परंपरा को भाइयों ने सबसे ज्यादा छोड़ा, मातायें धीरे-2 छोड़ती है लेकिन ज्ञान में मातायें सबसे तेज़ है।

बाबाः ज्ञान में? ज्ञान में तेज़ है या प्यूरिटी में तेज़ है?

जिज्ञासुः प्यूरिटी में तेज़ है।

बाबाः ☺ ज्ञान में तो रावण भी बड़ा तीखा था। क्या? ज्ञान में तीखा होना बड़ी बात नहीं है। लेकिन ज्ञान को प्रैक्टिकल जीवन में धारण करना बड़ी बात है।

और करो भाईयों का झण्डा ऊँचा। ☺

Time: 47.10-47.52
Student: Baba, the brothers have renounced the traditions of the path of *bhakti* the most, [while] the mothers renounce it gradually; still, the mothers are the sharpest in knowledge.
Baba: In knowledge? Are they sharper in knowledge or in *purity*?
Student: They are sharper in purity.
Baba: ☺ Even Ravan was very sharp in knowledge. What? It is not a big thing to be sharp in knowledge. But it is a big thing to assimilate the knowledge in the life in practice. Raise the flag of brothers higher. ☺

समयः 47.53-49.48

जिज्ञासुः बाबा, कहा है कि जगदम्बा को योग का दान देना है। (बाबाः ठीक है।) लेकिन बाबा तो कहते हैं कि जगदम्बा तो डब्बा है।

बाबाः हँ? तुम्हारी नज़र में जगदम्बा कौन है? (जिज्ञासु - बड़ी माँ।) तुम्हारी नज़र में जगदम्बा देहधारी है या कोई आत्मा है?

जिज्ञासुः बाबा तो कहते है, ये ब्रह्मा ही तुम्हारी जगदम्बा है।

Time: 47.53-49.48
Student: Baba, it has been said that Jagdamba should be given the donation of *yog*. (Baba: It is correct.) But Baba says Jagdamba is a box.
Baba: Who is Jagdamba in your eyes? (Student: The senior mother.) Is Jagdamba a bodily being or a soul in your eyes?
Student: Baba says, this Brahma himself is your Jagdamba.

बाबाः फिर काहे के लिए जगदम्बा-जगदम्बा, डब्बा-डब्बा हिलाय पड़े हो? जो सन्यासी होते हैं उनकी बुद्धि कहाँ पड़ी रहती है? जो माला घुमाते हैं ना। तो गउमुख में एक कपड़ा होता है ऐसा, उसमें हाथ डाला और राम-6, बुद्धि सारी, बुद्धि रूपी हाथ सारा गउमुख में पड़ा रहता है। गऊ का मुख सुन्दर लगता है ना। उसी को ही याद करते हैं। अब उसमें प्रवेश करने वाली

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

आत्मा जगदम्बा है या वो गऊमुख जगदम्बा है? (जिज्ञासु - आत्मा।) सहनशक्ति किसने धारण की? (जिज्ञासु - ब्रह्मा ने।) ब्रह्मा ने सहनशक्ति धारण की। माता की मुख्य भूमिका ही है सहनशक्ति धारण करने की।

जिज्ञासुः जहाँ बीजरूप स्टेज में ब्रह्मा की सोल पढ़ाई पढ़ रही है...

बाबाः अरे, ब्रह्मा की सोल अभी मुख्य रूप से कहाँ पार्ट बजा रही है? हँ? (जिज्ञासु - एडवांस में।) हाँ, एडवांस में तो है। कोई, कोई तन है मुकर्रर कि नहीं? हँ? (जिज्ञासु - प्रजापिता।) प्रजापिता? प्रजापिता जगदम्बा है? (जिज्ञासु - प्रवेश करके पढ़ाई पढ़ रही है।) वो पढ़ाई पढ़ता है लेकिन जगदम्बा, पढ़ाई पढ़ाने वाला बाप है कि जगदम्बा है? (जिज्ञासु - बाप है।) हाँ, प्रवेश किसमें करता है मुख्य रूप से? (जिज्ञासु - जगदम्बा में।) जगदम्बा में।

Baba: Then why do you uttering Jagdamba-Jagdamba, box-box? Where is the intellect of the *sanyasis* focused? They rotate the rosary, don't they? So, there is *gaumukh*[9], a cloth like this (Baba is showing the shape); they put their hand in it and utter Ram-Ram-Ram-Ram-Ram-Ram. Their intellect, their hand like intellect remains completely in the *gaumukh*. The face (*mukh*) of a cow (*gau*) appears beautiful, doesn't it? They remember only that. Well, is the soul that enters her Jagdamba or is that *gaumukh* (the body) Jagdamba? (Student: The soul.) Who assimilated the power of tolerance? (Student: Brahma.) Brahma assimilated the power of tolerance. The very main quality of a mother is to assimilate the power of tolerance.

Student: The place where the soul of Brahma is studying the knowledge in the seed form stage…

Baba: *Arey*, where is the *soul* of Brahma mainly playing the *part* at present? (Student: In the advance [party].) Yes, it is no doubt in the advance [party]. [But] does it have any permanent body or not? (Student: Prajapita.) Prajapita? Is Prajapita Jagdamba? (Student: It is studying the knowledge after entering.) It studies the knowledge, but Jagdamba… is it the Father who teaches or is it Jagdamba who teaches? (Student: The Father.) Yes, in whom does he (the soul of Brahma) enter mainly? (Student: In Jagdamba.) In Jagdamba. … (to be continued)

Part-5

समयः 49.53-50.42

जिज्ञासुः बाबा, जैसे गीतापाठशाला दूर पड़ती है।

बाबाः हाथ तो उठा दो । हाँ।

जिज्ञासुः घर पे रोज़ मुरली सुनते हैं तो वो क्लास में नहीं आता है? क्लास में नहीं आता है? जैसे घर पे रोज़ मुरली सुन रहे हैं पाँच बजे। तो गीतापाठशाला में नहीं जा पाते। (बाबाः हाँ।) रोज़ की क्लास में नहीं आएगा?

बाबाः नहीं आते। हाँ। रोज़ क्लास में नहीं जाते हैं। घर में ही मुरली पढ़ लेते हैं। तो? **जिज्ञासुः** रोज़ की क्लास में नहीं मानी जाएगी?

बाबाः अरे कभी बाई चांस हुआ, घर में पढ़ ली तो दूसरी बात है। रोज़ ही अगर ऐसा करते हैं इसका मतलब परिवार का महत्व ही नहीं है।

जिज्ञासुः दूर पड़ता है ना बाबा। रोज़-रोज़ नहीं जा पाते।

[9] A bag in which a rosary is kept concealed

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबाः अच्छा तो सप्ताह में एक बार जाओ।

जिज्ञासुः सप्ताह में जाते हैं एक बार।

बाबाः हाँ, तो जाओ ना।

Time: 49.53-50.42
Student: Baba, if the *Gita paathshaalaa* is far away.
Baba: At least raise your hand. Yes.
Student: If we listen to the murli at home every day, is it not counted as a class? Is it not counted as class? For example we listen to the murli at home daily at 5 AM. We are unable to attend the class at the *Gita paathshaalaa*. (Baba: Yes.) Will it not be considered as the daily class?
Baba: You don't go. Yes. You don't attend the *class* [at Gita *paathshaalaa*] every day. You read the murli at home. So?
Student: Will it not be considered to be daily class?
Baba: *Arey*, if it happens by chance, if you read [the murli] at home, it is a different thing. If you do like this every day, it means that there is no importance of the [Brahmin] family at all.
Student: Baba, it is far away. We are unable to go there daily.
Baba: OK, then go once in a week.
Student: We go once in a week.
Baba: Yes, then go.

समयः 50.48-53.12

जिज्ञासुः बाबा, 2012 के अंत में प्रकृति की धुरी चेंज होगी।

बाबाः 2012 के अंत में क्या होगा?

जिज्ञासुः परिवर्तन हो जाएगा। धुरी चेंज होगी।

बाबाः प्रकृति का परिवर्तन हो जाएगा?

जिज्ञासुः माना देवताओं की तरफ, जो असुरों की तरफ है वो देवताओं की तरफ बुध्दि हो जाएगी।

बाबाः किसकी?

जिज्ञासुः ऐसा एक वाणी में बोला है।

बाबाः किसकी बुद्धि हो जावेगी देवताओं की तरफ?

जिज्ञासुः जगदम्बा।

बाबाः कोई तो आत्मा ऐसी होगी जो परिवर्तन की शुरुआत करेगी। अरे कोई होगी कि नहीं? वो ब्रह्मा की ही आत्मा है। हाँ।

जिज्ञासुः ये तो बोला कि बारह के अंत में...

बाबाः किसने बोला?

जिज्ञासुः वार्तालाप में आया है।

Time: 50.48-53.12
Student: Baba, [the inclination of] the axis of the earth will change in the end of [the year] 2012.
Baba: What will happen in the end of 2012?
Student: Transformation will take place. [The inclination of] the axis will change.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: The nature will change?
Student: I mean to say her intellect which is towards the demons [at present] will incline towards the deities.
Baba: Whose?
Student: It has been said in a vani (murli).
Baba: Whose intellect will incline towards the deities?
Student: Jagadamba.
Baba: There will be some soul like this who commences [the process of] transformation. *Arey*, will there be [someone] or not? It is the soul of Brahma himself. Yes.
Student: It was told that in the end of [two thousand] twelve…
Baba: Who said?
Student: It was mentioned in a discussion.

बाबाः वार्तालाप में आया, तो बोला किसने? वो 2012 की बात दुनियावी लोगों की बात है या मुरली की बात है? (जिज्ञासु - मुरली की।) मुरली की बात है?
जिज्ञासुः नहीं। धुरी चेंज होगी, प्रकृति का परिवर्तन होगा।
बाबाः हाँ, ये हो सकता है जो उन्होंने काल्कुलेशन निकाला है दुनियावालों ने कि 2012 में परिवर्तन होगा। सृष्टि जो है परिवर्तन को प्राप्त होगी, पृथ्वी की धुरी बदल जावेगी। तो पृथ्वी माता तो कौन है? सारी पृथ्वी नहीं चेंज हो जावेगी। पहले आत्मा चेंज होगी या पाँच तत्वों की पृथ्वी चेंज होगी? आत्मा चेंज होगी। तो पृथ्वी का पार्ट बजाने वाली आत्मा कौन है? (जिज्ञासु-जगदम्बा।) जगदम्बा है। तो उसकी मेंटेलिटी चेंज होगी। ये भी हो सकता है। बाकी ऐसे नहीं सारी दुनिया या सारी पृथ्वी चेंज हो जाएगी। (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) बिल्कुल होगा। अगर उनका काल्कुलेशन उनके हिसाब से सही है तो यही परिवर्तन हो सकता है। ये नहीं कि स्थूल 5 तत्व चेंज हो जावेंगे। या स्थूल रूप में पृथ्वी की धुरी चेंज हो जावेगी।
Baba: If it was mentioned in a discussion then who said it? Is the topic about 2012 mentioned by the worldly people or is it a topic of murli? (Student: Of murli.) Is it a topic of murli?
Student: No. [I am asking about] the change in [the inclination of] the axis, the change of nature.
Baba: Yes, it can be possible that the *calculation* made by the people of the world, that the transformation will take place in 2012, the world will transform, [the inclination of] the axis of the earth will change. So, who is the Mother Earth? The entire earth will not *change*. Will the soul *change* first or will the earth made up of the five elements *change* [first]? The soul will *change*. So, which soul plays the *part* of the earth? (Student: Jagadamba.) It is Jagadamba. So, her *mentality* will *change*. This can be possible. But it is not that the entire world or the entire earth will *change*. (Student said something.) It will definitely happen. If their calculation is correct from their point of view then this is the only transformation that is possible. It is not that the five physical elements will *change* or that the axis of the earth will *change* physically.

समयः 53.17-54.26
जिज्ञासुः महाभारत में द्रौपदी का चीरहरण बताया। (बाबाः हाँ, जी।) इसका क्या मतलब? इतने बड़े-बड़े महारथी रहते हुए।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबाः इसका यही मतलब है कि तुम सब द्रौपदियाँ हो। सब द्रौपदियों के जीवन में जब फाइनल परीक्षाएं होंगी तो ऐसी परीक्षाएं आएंगी। घरवाले भी सहयोगी नहीं बनेंगे। बाहरवाले भी सहयोगी नहीं बनेंगे। धर्मगुरु, आचार्य, पण्डित, पुजारी, मौलवी, कोई सहयोगी नहीं बनेंगे। द्रौपदी ने किसको पुकारा आखिर? (किसी ने कहा - भगवान को।) भगवान से जिनकी लौ लगी हुई होगी, भगवान सहयोगी बनेगा और इज्जत बचाएगा। एक द्रौपदी की बात नहीं है। तुम सब द्रौपदियाँ हो।

क्या हुआ? सब लोग चिंता में पड़ गए क्या?

Time: 53.17-54.26

Student: Stripping of Draupadi (*chiirharan*) has been shown in the [epic] Mahabharata. (Baba: Yes.) What does it mean? So many big *mahaarathis* (great warriors) were sitting there.

Baba: It just means that you all are Draupadis. When the final exams take place in the life of all the Draupadis, they will face such tests that neither the members of family nor those from the outside [world] will become helpful. Nobody from among the religious gurus, *acharya* (teachers), pandits (learned ones), *pujaaris* (priests), *maulvis* (teachers) will become helpful. Whom did Draupadi call at last? (Someone said: God.) Only God will become helpful and save the honour of those who are absorbed [in the remembrance] of God. It is not about just one Draupadi. You all are Draupadis.

What happened? Has everyone started worrying?

समयः 54.33-56.22

जिज्ञासुः बाबा, भक्तिमार्ग में ... की पूजा में जो दालों का उपयोग किया जाता है उनमें तुवर की दाल को क्यों फेंक दिया जाता है?

बाबाः तुवर की दाल का प्रयोग नहीं किया जाता है? (जिज्ञासु: जी हाँ।) ये तो नई बात बताई। और सब दालों का प्रयोग करते हैं? तुवर की दाल का प्रयोग नहीं करते? अच्छा? तुवर की दाल ज्यादा गरम तो नहीं होती? हाँ। ऐसे तो नेचुरोपेथी के डॉक्टर कहते हैं दाल खाना ही नहीं चाहिए। (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) दाल, चावल, आलू। दाल, चावल और आलू। चावल ठण्डा है और इतना ठंडा है कि जो आलू गरम है और दाल गरम है उसको बराबर कर देगा। और जल्दी बन जाता है। पुरुषार्थ करने में ज्यादा टाइम नहीं देना पड़ेगा। हाँ। पचने में भी आसान रहेगा। ये एक जनरल बात बताई है। (ऐसे नहीं) जो मधुमेह के मरीज़ हैं वो भी खाना शुरु कर दें।

Time: 54.33-56.22

Student: Baba, in the path of *bhakti*, in the worship of…, among the pulses used for the worship, why is the pigeon pea[10] pulse thrown away?

Baba: The pigeon pea pulse is not used? (Student: Yes.) You said a new thing. All the other pulses are used? The pulse of pigeon pea is not used? *Acchaa*. Is the pulse of pigeon pea hotter in nature? Yes. As such, the *naturopathy* doctors say that you shouldn't eat pulses at all. (Someone said: Baba has said: pulses, roti, potatoes and rice…) Pulses, rice, potatoes. Pulses, rice and potatoes. Rice has a cold nature and it is cold to such an extent that it will neutralize the hot nature of potatoes and pulses. And it can be cooked quickly. You will not have to spend more *time* to make *purushaarth* [in cooking it]. It will also be easy to digest. But this was said in *general*. [Otherwise,] the diabetes patients will also start eating it.

[10] *Tuvar*: a kind if pulse; *Cajanus indicus*

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समयः 56.23-57.36

जिज्ञासुः बाबा, जो बड़े-बड़े तीर्थ स्थान बने इनका बेहद में क्या अर्थ है?

बाबाः क्या बने हैं?

जिज्ञासुः बड़े-बड़े तीर्थ स्थान जो बने हैं (बाबाः हाँ।) उसका बेहद में क्या अर्थ है?

बाबाः पार लगाने वाला स्थान। क्या? पार लगाने वाला स्थान। दुनिया का सबसे बड़ा तीर्थ स्थान कौनसा है? माउंट आबू। फिर जो गीतापाठशालाएं हैं, मिनीमधुबन हैं, जो वहाँ तक नहीं पहुँच पाएंगे, इतना बुद्धि में ज्ञान नहीं बैठा है, तो मिनीमधुबन तक तो आ सकते हैं, गीतापाठशाला तक तो आ सकते हैं। तो वो ही उनका तीर्थ स्थान हो गया। बुद्धि को किनारे लगाने वाला स्थान। तीर माना किनारा। गीतापाठशाला में आते हैं तो चारों तरफ से बुद्धि खिंच करके एक परमात्मा में लगाई जाती है कि नहीं? लगाई जाती है। तो जहाँ जिस स्थान में बुद्धि सेट हो गई वो तीर्थ स्थान हो गया उस आत्मा के लिए।

Time: 56.23-57.36

Student: Baba, what is the unlimited meaning of the big pilgrimage centers that have been built?

Baba: What have been built?

Student: The big pilgrimage centers that have been built. (Baba: Yes.) What is its unlimited meaning?

Baba: The place that brings you across. What? The place that brings you across. Which is the biggest pilgrimage center of the world? Mount Abu. Then the *Gita paathshaalaas*, the *mini madhubans*… those who will not be able to reach there (Mount Abu); if the knowledge has not sat in their intellect to that extent, so they can at least reach the *mini madhuban*, they can at least reach the *Gita paathshaalaa*. So, that itself will be the pilgrimage center for them. [*Tiirth* means] the place which brings the intellect to a destination. *Tiir* means shore. When you go to the *Gita paathshaalaa*, is the intellect drawn from everywhere and focused on the one Supreme Soul or not? It is focused. So, the place where the intellect is *set* becomes the pilgrimage center for that soul.

समयः 57.38-59.31

जिज्ञासुः बाबा, जैसे विचार-सागर मंथन करने से रत्न निकलते भी है और कुछ अनुभव भी होते है। क्या उसको बाप से वेरिफाय करवा कर शेयर करना चाहिए या डायरेक्ट शेयर करना चाहिए?

बाबाः विचार सागर मंथन करने से जो रतन निकलते हैं उन रतनों को वेरिफाय कराना तो अच्छी बात है। खराब बात तो नहीं है। ऐसा न हो कि हमने विचार सागर मंथन करके जो काल्कुलेशन निकाला है उसमें कोई त्रुटि रह गई हो। और हम अपनी मनमत पर उल्टा काम करने लगें। और दूसरों से कराने लग पड़ें। तो बाबा के सामने बैठकरके क्लीयर कर लेने में क्या हर्जा है? नहीं तो बहुत ऐसे हैं जो राजयोग सिखाने लग पड़ते हैं कन्याओं माताओं को। बाबा मुरली में कहते हैं एक बाप ही राजयोग सिखाय सकता है। तो ये जो विचार सागर मंथन हुआ ये वेरिफाय कराने योग्य है या नहीं है? (जिज्ञासु - है।) है, लेकिन नहीं कराते हैं. क्योंकि

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

नीयत खराब है। अंदर चोरी भरी हुई है। चोरी के संस्कार भर गए हैं इस्लाम धर्म में कई जन्म के तो वेरिफाय नहीं कराते। बहुत दिन के बाद आपने ये बात पूछी है। अच्छी बात पूछी या खराब बात? अच्छी बात है।

Time: 57.38-59.31

Student: Baba, by churning the ocean of thoughts gems [of knowledge] emerge as well as we have some experiences. Should we share them [with others] after verifying them with the Father or can we directly share them [with others]?

Baba: It is good to get the gems [of knowledge] that emerge from the churning of ocean of thoughts verified. It is certainly not bad. It should not happen that there is some fault in the *calculation* you have made by churning the ocean of thoughts. And you start performing opposite actions based on the opinion of your mind and start making others to perform [such tasks]. So, what is the harm in clearing them by sitting in front of Baba? Otherwise, there are many who start teaching Raja yoga to the virgins and mothers. Baba says in the murli: Only the One Father can teach Raja yoga. So, the churning of the ocean of thoughts that took place, is it worth verifying or not? (Student: It is.) It is; but they do not get it verified; because their intention is bad. They have a secret intention within. They have the *sanskaars* of theft of the Islam for numerous births; so they do not get it verified. You have asked this after many days. Did you ask a good question or a bad question? It is a good question.

समयः 59.40-01.01.37

जिज्ञासुः बाबा, कोई माताएं भट्ठी कर चुकी हैं। लेकिन कुछ समय से बाबा से मिल नहीं पाई हैं उनके पारिवारिक स्थिति के कारण। लेकिन अगर वो बाबा को स्थूल सेवा भेजना चाहती हैं तो हम ले या नहीं ले?

बाबाः अगर रेग्युलर माताएं हैं, भट्ठी करने के बाद।

जिज्ञासुः क्लास नहीं कर रही हैं बाबा। वो घर में ही बाबा की सी.डी छुपके सुनती हैं , उनके हस्बैंड लाइक नहीं करते। लेकिन वो उनकी लगन बहुत है, बाबा को याद करती हैं और सेवा भी भेजी है उन्होंने तो उसको एक्सेप्ट करना चाहिए?

बाबाः अरे कम से कम मोहल्ले-पड़ोस में तो दो आत्माओं का सुनाय सकती हैं?

जिज्ञासुः हाँ, वैसे वो आपस में (क्लास) करती हैं...

बाबाः आपस में सुनाकरके दो आत्माओं, चार आत्माओं का संगठन तो बैठकरके कर सकती हैं एक जगह?

जिज्ञासुः हाँ, वो करती हैं।

बाबाः हाँ। उसकी डायरी बना लें। उस डायरी में रोज़ साईन करें। प्रूफ हो जाएगा कि हाँ भई रोज़ क्लास करती हैं।

Time: 59.40-01.01.37

Student: Baba, there are some mothers who have undergone *bhatti*. But they have not been able to meet Baba since some time because of their family circumstances. But if they want to send physical service to Baba, should we take it or not?

Baba: If the mothers are *regular* after undergoing *bhatti*.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: Baba, they do not attend classes. They secretly listen to the CDs (classes) of Baba at home [because] their husbands don't like it. But they are very devoted. They remember Baba and have also sent service; so should it be accepted?
Baba: *Arey*, they can at least narrate [knowledge] to two souls in the suburb and neighborhood?
Student: Yes, in a way, they organize [classes] among themselves.
Baba: They can at least narrate to each other [in their neighbourhood] and hold a gathering of two-four souls at one place?
Student: Yes, they do that.
Baba: Yes. They should prepare a *diary* for it. They should *sign* in that *diary* every day. There will be a *proof* [showing:] yes, they attend the classes every day.

जिज्ञासुः अभी वर्तमान में उन्होंने सेवा भेजी है बाबा वो...

बाबाः वो ही तो कहा - प्रूफ होना चाहिए। धन की सेवा ही सब कुछ बड़ी होती है या ज्ञान की सेवा भी बड़ी है? (जिज्ञासु - ज्ञान की।) हाँ तो ज्ञान की सेवा भी करने वाला होना चाहिए ना। बांधेली माताओं को भी छूट है। जो साल, छह महीने से भट्ठी करने के बाद लगातार क्लास कर रही हैं, वे ईश्वरीय सेवा में धन अर्पण कर सकती हैं।

जिज्ञासुः शुरू में तो बाबा रहा उनका लेकिन अभी पिछले कुछ समय से वो नहीं कर पा रही हैं।

बाबाः कोई बात नहीं। माताओं की मनसा तो अच्छी होती है।

जिज्ञासुः मनसा तो अच्छी है बाबा।

बाबाः मनसा सेवा, अव्यभिचारी सेवा करें। ओम् शांति।

Student: Baba, they have presently sent service...
Baba: That is what was said: There should be a *proof* [of attending the classes]. Is just the service through wealth everything, is it a big service or is the service of [giving] knowledge also big? (Student: Of knowledge.) Yes, so they should also be the ones who do the service of knowledge, shouldn't they? *Bandheli* mothers (mothers in bondage) also have liberty. Those who have been attending classes continuously for a year or six months after undergoing *bhatti*, they can offer money in the service of God.
Student: Baba, they were [regular] in the beginning, but now, they are unable to attend [the classes] since some time.
Baba: It doesn't matter. The mind of the mothers is certainly good.
Student: Baba, their mind is good.
Baba: They can do service through the mind, an unadulterated service. Om Shanti. (Concluded)

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info